19

शान्ति जो यीशु देता है

(यूहन्ना 16)

''मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है'' (आयत 33)।

अटारी वाले कमरे में यीशु ने प्रेरितों के साथ अपनी बात चीत का समापन उनके साथ इस प्रतिज्ञा के साथ किया कि वे उसमें शान्ति पा सकते हैं। हमें इस पर आश्चर्य नहीं होगा। पृथ्वी की उसकी सेवकाई का आरम्भ ''सुसमाचार,'' ''बड़े आनन्द,'' और ''मनुष्यों में शान्ति'' के प्रभु की घोषणा के साथ हुआ (लूका 2:10, 14)। स्वर्गीय सेना की इस घोषणा से मेल खाते हुए क्रूस की परछाई के बावजूद यीशु ने अपने डरे हुए प्रेरितों का ध्यान उस शान्ति की ओर दिलाया जो उनके पास थी।

वह अपने प्रेरितों को परमेश्वर *के साथ* शान्ति नहीं दे रहा था। वह उनके पास पहले से थी, क्योंकि परमेश्वर *के साथ* शान्ति एक कानूनी शान्ति की तरह है जो उसके साथ वाचा के सम्बन्ध में आने पर ही मिलती है। उसके उद्धार को ग्रहण करके उन्होंने परमेश्वर के स्वागत को मान लिया था और वे उसके साथ शान्ति में आ गए थे। प्रेरितों की वर्तमान स्थिति में वे यह कह सकते थे कि उनके लिए जो उसके अनुग्रह के अधीन रह रहे हैं ''कोई दण्ड नहीं'' (देखें रोमियों 8 :1)। जो शान्ति यीशु ने उनके सामने रखी वह परेशानियों, कठिनाइयों और तकलीफ़ों के बीच शान्ति थी अर्थात परमेश्वर *की* शान्ति जो उनकी प्रार्थना के इन कठिन समयों में आने पर मिलनी थी। परमेश्वर *के साथ* शान्ति बनी रहने वाली शान्ति है जो उन्हें जो अनुग्रह से उद्धार पाते हैं तुरन्त दी जाती है और यह उनके साथ रहती है। परमेश्वर *की* शान्ति वह व्यवहारिक शान्ति है जो वह अपने लोगों को उसके पास आने पर देता है और उस शान्ति का दावा करता है जिसे वह अपने बच्चों को जीवन के बवंडरों के बीच देता है।

अटारी वाले कमरे में अपनी पूरी चर्चा में यीशु ने प्रेरितों को उनके सामने आने वाले कठिन समयों की चेतावनी दी थी। उसकी बातों से पहले तो उन्हें यह मालूम था कि संसार के दुष्ट लोग उनसे घृणा करेंगे (15:18-25), उन्हें सताएंगे (15:20), और धर्म के कारण उनके नामों को बदनाम करेंगे। यीशु द्वारा संसार की ओर से उन पर आने वाले कष्ट की बात एक बार फिर से करने पर उनके दिमाग में उलझन बनी रही होगी। परन्तु उनके लिए उसे यह कहते सुनना कितनी अच्छी बात होगी कि ''... तुम्हें मुझ में शान्ति मिले''!

यह अन्तर बड़ा ही स्पष्ट था: संसार में उन्हें क्लेश मिलना था, पर यीशु में उन्हें शान्ति मिलनी थी। शान्ति की प्रतिज्ञा उस अटारी वाले कमरे में उनके साथ यीशु की बातचीत में उसका अन्तिम संदेश था, और यह संदेश उनके लिए सबसे बड़ी तसल्ली होना था। वह उन्हें बता रहा

था कि ''प्रतिज्ञाओं पर ध्यान लगाए रखो, न कि अपनी परेशानियों पर।'' उसने अपनी सबसे अच्छी खबर अन्त तक अपने पास रखनी थी। गहरा दुख सहने और लगातार विरोध का सामना करने के बावजूद यीशु ने उनके साथ होना था और उनके लिए शान्ति देनी थी।

चाहे उसने विस्तार से नहीं बताया कि वह उन्हें कैसी शान्ति देने वाला है पर उसने उनके और हमारे मनों में कुछ विशेष बातों को डालने के लिए काफ़ी कुछ कह दिया। यीशु के संक्षिप्त शब्दों के अनुसार, उसकी शान्ति कैसी है ?

उसकी बातों के द्वारा शान्ति

यह वह शान्ति है जो उसके वचनों में टिकी हुई है। यीशु की शान्ति हमें मिल सकती है जब हम उसके वचनों को सच्चे मान लेते हैं। उसने कहा, ''मैंने ये बातें तुम से इसलिए कहीं हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले'' (16:33क)। उसने उन्हें जो कुछ भी कहा था वह इसलिए कहा ताकि उन्हें यह शान्ति मिल सके। यीशु के मन की एक मुख्य चिन्ता यह थी कि उसके चेलों के साथ संसार चाहे कैसा भी व्यवहार करे पर उनके पास शान्ति बनी रहे। उसने पहले कहा था, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (14:27)।

यीशु की शान्ति प्रामाणिक और वास्तविक है यानी यह अस्पष्ट या धुंधला सा विचार नहीं है। उसकी शिक्षा सच्ची शान्ति का रास्ता बताती है और उसके निर्देशों को मान लेने वाला व्यक्ति इसे पाकर सम्भाले रख सकता है।

शान्ति केवल उसी में

यह वह शान्ति है जो केवल यीशु में मिलती है। प्रेरितों ने यीशु को यह कहते हुए सुना था, ''तुम्हें मुझ में शान्ति मिले।'' उसने उन्हें उसमें बने रहने के महत्व को पहले दिखाया था: ''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते'' (15:5)। बिना यीशु के यह कारगर नहीं हो सकता था और बिना उसके वे शान्ति नहीं पा सकते थे।

यीशु अन्धकार की शक्तियों पर जय पाने के लिए क्रूस पर जा रहा था। संसार की भयंकर खामोशी और दुष्ट आक्रमण क्रूस पर बहे लहू के द्वारा पाई गई विजय को रोक नहीं सकता था। भविष्य में उसमें बने रहने वाले सब लोगों को उसके बलिदान की सफलता में भाग लेना था। यीशु ने किसी के लिए भी जिसे आवश्यकता है अनुग्रह का अपना उपाय दे दिया है और वह किसी के लिए भी अपनी शान्ति दे देगा, जो इसे पाने की इच्छा रखता है। ये शान्ति केवल उन्हीं को मिलती है जो उसकी उपस्थिति में बने रहते हैं अर्थात जो लोग उसकी क्षमा और सामर्थ और प्रतिज्ञाओं की शरण में रहते हैं।

हर परीक्षा में शान्ति

यह वह शान्ति है जो हर कष्ट के लिए है। यीशु ने कहा, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, क्योंकि मैंने संसार को जीत लिया है।'' हम असफलता मिलने पर हम दिलेर

हो सकते हैं क्योंकि यीशु ने हमें शान्ति दी है (मत्ती 14:27)। भय का सामना करने पर हम दिलेर हो सकते हैं क्योंकि यीशु ने हमें अपनी उपस्थिति दी है (मरकुस 6:50)। भयंकर क्लेश का सामना करने पर हम दिलेर हो सकते हैं, क्योंकि यीशु ने हमें अपनी शान्ति दी है (यूहन्ना 16:33)।

सुसमाचार की अविश्वसनीय खबर यह है कि यीशु ने ''संसार को जीत लिया'' यानी इसकी परीक्षाओं को, इसके अपराधों को, इसके प्रलोभनों को, इसके भरमाने वाले को और इसके अस्थाईपन को जीत लिया है। हम भी यूहन्ना के साथ कह सकते हैं, ''क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4)। यीशु की विजय में गहराई है क्योंकि यह हर उस बात को जो संसार हमारी ओर फैंक सकता है समेट लेती है। इसमें लम्बाई है, क्योंकि हम अपने सफ़र के पूरा होने तक इसमें भाग ले सकते हैं। इसमें चौड़ाई है, क्योंकि जो भी विश्वास करता और विश्वास करना जारी रखता है वह इसे पा सकता है।

सारांश

प्रेरितों की तरह हम यीशु की शान्ति ढूंढ़ते हैं, वह शान्ति जो उसकी सच्चाई के द्वारा मिलती है, उसकी उपस्थिति में रहती है और इस संसार के सब क्लेशों पर जय पा लेती है। हम इस शान्ति को कैसे पा सकते हैं और उसमें बने रह सकते हैं? शान्ति का मार्ग रोमियों 6:3 में बताया गया है: हम उसमें सुसमाचार को मानने के द्वारा प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:17 भी देखें)। हम उसमें ज्योति में वफ़ादारी से चलकर बने रहते हैं (1 यूहन्ना 1:7), और फिर हम उन परेशानियों तक पहुंचकर जो हमें घूंसे मारती रहती हैं और उसके पैरों तले डाल देते हैं (फिलिप्पियों 4:6, 7)। हमारी विनतियों के जवाब में वह अपनी शान्ति स्वर्गदूतों के एक दल की तरह भेजता है; यह हमारे हृदयों की रखवाली करेगी और हमें इस जीवन में हम पर आ सकने वाले बड़े से बड़े और भयंकर तूफ़ानों में शान्त रखेगी। जब हम शान्ति के राजकुमार में बने रहते हैं तो हमें उस बनी रहने वाली शान्ति से आशीष मिलती है जिसे उसने अपने बहुमूल्य लहू के साथ दिया, उस व्यावहारिक शान्ति के साथ जो उसके जीवन और विजय में हमारे सहभागी होने पर हमें प्रतिदिन मिलती रहती है।

''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?'' (रोमियों 6:3)।

''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:6, 7)।

''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमियों 5:1)।